सिविल सेवा परीक्षा...

संस्कृति IAS

सामान्य अध्ययन

प्राचीन भारत का इतिहास

भाग-2

दूरस्थ शिक्षा कार्यक्रम

636, भू-तल, मुखर्जी नगर, दिल्ली-110009

9555-124-124 sanskritiiasedu@gmail.com

प्रिय विद्यार्थी,

सबसे पहले संस्कृति IAS के 'दूरस्थ शिक्षा कार्यक्रम' का हिस्सा बनने पर आपको बहुत बधाई।

सिविल सेवा परीक्षा, जिसे आई.ए.एस. परीक्षा के नाम से जाना जाता है; यह देश की प्रतिष्ठित लोक सेवाओं में चयन के लिये आयोजित होने वाली सर्वाधिक लोकप्रिय प्रतियोगी परीक्षा है। आज देश में युवाओं की एक बड़ी संख्या है जो सिविल सेवाओं में जाकर राष्ट्र निर्माण में अपना योगदान देना चाहते हैं। परंतु, गंभीरतापूर्वक इस परीक्षा की तैयारी करना हर किसी के लिये संभव नहीं हो पाता। इसकी एक बड़ी वजह यह है कि इस परीक्षा की तैयारी के लिये दिल्ली, प्रयागराज या लखनऊ जैसे शहरों में रहना किसी भी निम्न-मध्यम वर्गीय पृष्ठभूमि वाले विद्यार्थी के लिये संभवप्राय नहीं होता; दूसरा, एक बड़ी संख्या ऐसे विद्यार्थियों की भी है जो पहले से नौकरी कर रहे हैं। इन विद्यार्थियों के लिये मुख्य समस्या समय की होती है क्योंकि कोचिंग संस्थान में जाकर तैयारी करने में डेढ़-दो वर्ष का समय लगता है, जबकि नौकरी से इतनी लंबी छुट्टी मिलनी प्राय संभव नहीं होती।

ऐसे ही विद्यार्थियों को ध्यान में रखते हुए संस्कृति IAS ने 'दूरस्थ शिक्षा कार्यक्रम' की शुरुआत की है।

इस कार्यक्रम के अंतर्गत, कम फीस में विद्यार्थियों को किसी भी कोर्स की पूरी पाठ्य सामग्री उनके घर पर भेजी जाती है। यह पाठ्य सामग्री सिविल सेवा परीक्षा के पाठ्यक्रम के अनुरूप होती है। अगर कोई विद्यार्थी गंभीरता से इस पाठ्य सामग्री का अध्ययन करता है तो उसकी इतनी तैयारी निश्चित रूप से हो जाएगी कि वह सिविल सेवा परीक्षा को पास कर सके।

हालाँकि, किसी भी विद्यार्थी के दिमाग में यह संशय उत्पन्न होना स्वभाविक है कि अगर इस पाठ्य सामग्री को पढ़कर यह परीक्षा पास हो सकती है तो फिर कोचिंग संस्थान में पढ़ाई करने की क्या आवश्यकता है? अत: यह स्पष्ट करना आवश्यक है कि इस कार्यक्रम के अंतर्गत आपको सिर्फ संपूर्ण पाठ्य सामग्री उपलब्ध कराई जाएगी। क्लासरूम प्रोग्राम में पाठ्य सामग्री के अतिरिक्त विद्यार्थी की तैयारी को प्रभावी बनाने के लिये कई तरह के कार्यक्रम चलाए जाते हैं, जैसे नियमित कक्षा, क्लास टेस्ट, टेस्ट सीरीज़, शंका निवारण सत्र, नियमित रूप से अध्यापक से मिलकर तैयारी को बेहतर बनाने की सुविधा इत्यादि।

अत: 'दूरस्थ शिक्षा कार्यक्रम' को क्लासरूम प्रोग्राम का विकल्प नहीं कहा जा सकता है। यद्यपि, ऐसे विद्यार्थी जो किसी कारणवश दिल्ली या प्रयागराज जैसे शहरों में जाकर सिविल सेवा परीक्षा की तैयारी नहीं कर सकते हैं, ऐसे विद्यार्थियों के लिये 'दूरस्थ शिक्षा कार्यक्रम' अपनी प्रकृति में निश्चित रूप से एक श्रेष्ठ विकल्प है।

विधिक घोषणाएँ

- इस पुस्तक में प्रकाशित सूचनाएँ, समाचार, ज्ञान एवं तथ्य पूरी तरह से सत्यापित किये गए हैं। फिर भी, यदि कोई जानकारी या तथ्य गलत प्रकाशित हो गया हो तो प्रकाशक, संपादक या मुद्रक, उससे किसी व्यक्ति विशेष या संस्था को पहुँची क्षति के लिये ज़िम्मेदार नहीं है।
- हम विश्वास करते हैं कि इस पुस्तक में छपी सामग्री लेखकों द्वारा मौलिक रूप से लिखी गई है। अगर कॉपीराइट उल्लंघन का कोई मामला सामने आता है तो प्रकाशक को ज़िम्मेदार नहीं ठहराया जाएगा।
- सभी विवादों का निपटारा दिल्ली न्यायिक क्षेत्र में होगा।
- © कॉपीराइट: संस्कृति पब्लिकेशन्स, सर्वाधिकार सुरक्षित। इस प्रकाशन के किसी भी अंश का प्रकाशन अथवा उपयोग, प्रतिलिपीकरण, ऐसे यंत्र में भंडारण जिससे इसे पुन: प्राप्त किया जा सकता हो या स्थानांतरण, किसी भी रूप में या किसी भी विधि से (इलेक्ट्रॉनिक, यांत्रिक, फोटो-प्रतिलिपि, रिकॉर्डिंग या किसी अन्य प्रकार से) प्रकाशक की पूर्वानुमति के बिना नहीं किया जा सकता।

विषय-सूची

इकाई	टॉपिक	पेज संख्या
8	मौर्योत्तर काल	1-48
9	गुप्त साम्राज्य	49-81
10	गुप्तोत्तर काल	82-90
11	दक्षिण भारत का इतिहास	91-113
12	संगम काल	114-134

❑❑❑❑❑

विस्तृत अनुक्रम

इकाई	टॉपिक	पेज संख्या
8	**मौर्योत्तर काल**	**1-48**

- परिचय

देशी राज्य

- शुंग वंश (185 ई.पू. से 75 ई.पू.)
  - ➤ जानकारी के स्रोत
  - ➤ राजनीतिक स्थिति
  - ➤ प्रशासनिक स्थिति
  - ➤ सामाजिक स्थिति
  - ➤ धार्मिक स्थिति
  - ➤ आर्थिक स्थिति
  - ➤ कला एवं संस्कृति
- कण्व वंश (75 ई.पू. से 30 ई.पू.)
  - ➤ जानकारी के स्रोत
  - ➤ प्रमुख ऐतिहासिक बिंदु
- सातवाहन वंश
  - ➤ जानकारी के स्रोत
  - ➤ राजनीतिक स्थिति
  - ➤ प्रशासनिक स्थिति
  - ➤ सामाजिक स्थिति
  - ➤ धार्मिक स्थिति
  - ➤ आर्थिक स्थिति
  - ➤ कला एवं संस्कृति
- चेदि वंश
  - ➤ जानकारी के स्रोत
  - ➤ खारवेल
  - ➤ खारवेल का मूल्यांकन

विदेशी राज्य

- हिंद-यवन
  - ➤ जानकारी के स्रोत
  - ➤ राजनीतिक स्थिति
  - ➤ हिंद-यवनों का पतन
  - ➤ हिंद-यवनों का योगदान/प्रभाव
- शक/इंडो-सीथियन
  - ➤ जानकारी के स्रोत
  - ➤ शकों की विभिन्न शाखाएँ
  - ➤ महाक्षत्रप 'रुद्रदामन' व उसका जूनागढ़ अभिलेख
- पह्लव/पार्थियन
  - ➤ जानकारी के स्रोत
  - ➤ प्रमुख ऐतिहासिक बिंदु
- कुषाण
  - ➤ जानकारी के स्रोत
  - ➤ राजनीतिक स्थिति
  - ➤ प्रशासनिक स्थिति
  - ➤ सामाजिक स्थिति
  - ➤ धार्मिक स्थिति
  - ➤ आर्थिक स्थिति
  - ➤ कला एवं संस्कृति
- मौर्योत्तरकालीन स्थल व उनकी वर्तमान पहचान
- मौर्योत्तरकालीन रचनाएँ व रचनाकार

इकाई	टॉपिक	पेज संख्या
9	**गुप्त साम्राज्य**	**49-81**
	• पृष्ठभूमि • जानकारी के स्रोत ➤ साहित्यिक स्रोत ➤ पुरातात्त्विक स्रोत • राजनीतिक स्थिति ➤ चंद्रगुप्त प्रथम ➤ समुद्रगुप्त ➤ चंद्रगुप्त द्वितीय 'विक्रमादित्य' ➤ कुमारगुप्त प्रथम ➤ स्कंदगुप्त 'क्रमादित्य' • प्रशासनिक स्थिति ➤ केंद्रीय प्रशासन ➤ प्रांतीय प्रशासन ➤ ज़िला प्रशासन ➤ नगरीय प्रशासन ➤ स्थानीय प्रशासन ➤ न्याय प्रशासन ➤ सैन्य प्रशासन • आर्थिक स्थिति • सामाजिक स्थिति • धार्मिक स्थिति • कला एवं संस्कृति ➤ स्थापत्य कला ■ स्तूप निर्माण कला ■ गुहा निर्माण कला ■ मंदिर निर्माण कला ➤ मूर्तिकला ➤ चित्रकला ■ अजंता चित्रकला ■ बाघ चित्रकला ➤ शिक्षा एवं साहित्य ➤ विज्ञान एवं तकनीक	
10	**गुप्तोत्तर काल**	**82-90**
	• परिचय • वल्लभी का मैत्रक वंश • मालवा के यशोधर्मन • कन्नौज का मौखरी वंश • बंगाल का गौड़ वंश • स्थानेश्वर का पुष्यभूति वंश ➤ हर्षवर्द्धन ■ हर्षकालीन प्रशासनिक स्थिति ■ हर्षकालीन आर्थिक स्थिति ■ हर्षकालीन सामाजिक स्थिति ■ हर्षकालीन धार्मिक स्थिति ■ हर्षकालीन साहित्य ■ हर्ष के बाद की स्थिति	
11	**दक्षिण भारत का इतिहास**	**91-113**
	• पृष्ठभूमि • चालुक्य वंश ➤ राजनीतिक स्थिति ■ बादामी के चालुक्य ■ कल्याणी के चालुक्य ➤ प्रशासनिक स्थिति ➤ धार्मिक स्थिति ➤ कला एवं संस्कृति • राष्ट्रकूट वंश ➤ राजनीतिक स्थिति ➤ प्रशासनिक स्थिति ➤ कला एवं संस्कृति • पल्लव वंश ➤ राजनीतिक स्थिति ➤ प्रशासनिक स्थिति ➤ धार्मिक स्थिति ➤ कला एवं संस्कृति • चोल वंश ➤ राजनीतिक स्थिति ➤ प्रशासनिक स्थिति ➤ धार्मिक स्थिति ➤ कला एवं संस्कृति	

इकाई	टॉपिक	पेज संख्या
12	**संगम काल**	**114-134**
	• पृष्ठभूमि : महापाषाण संस्कृति ➤ महापाषाणिक स्मारकों के प्रकार ➤ महापाषाण संस्कृति की सामान्य विशेषताएँ • संगम काल : परिचय ➤ जानकारी के स्रोत ■ संगम साहित्य ■ संगम महाकाव्य ➤ तीन संगमों का आयोजन ➤ राजनीतिक स्थिति ■ चोल राजवंश ■ चेर राजवंश ■ पांड्य राजवंश ➤ प्रशासनिक स्थिति ➤ सामाजिक स्थिति ➤ धार्मिक स्थिति ➤ आर्थिक स्थिति ➤ कला एवं स्थापत्य ➤ संगमकालीन प्रमुख शब्दावलियाँ	

❑❑❑❑❑

इकाई

8

मौर्योत्तर काल
(Post-Mauryan Period)

- परिचय

देशी राज्य

- शुंग वंश (185 ई.पू. से 75 ई.पू.)
  - ➤ जानकारी के स्रोत
  - ➤ राजनीतिक स्थिति
  - ➤ प्रशासनिक स्थिति
  - ➤ सामाजिक स्थिति
  - ➤ धार्मिक स्थिति
  - ➤ आर्थिक स्थिति
  - ➤ कला एवं संस्कृति
- कण्व वंश (75 ई.पू. से 30 ई.पू.)
  - ➤ जानकारी के स्रोत
  - ➤ प्रमुख ऐतिहासिक बिंदु
- सातवाहन वंश
  - ➤ जानकारी के स्रोत
  - ➤ राजनीतिक स्थिति
  - ➤ प्रशासनिक स्थिति
  - ➤ सामाजिक स्थिति
  - ➤ धार्मिक स्थिति
  - ➤ आर्थिक स्थिति
  - ➤ कला एवं संस्कृति
- चेदि वंश
  - ➤ जानकारी के स्रोत
  - ➤ खारवेल
  - ➤ खारवेल का मूल्यांकन

विदेशी राज्य

- हिंद-यवन
  - ➤ जानकारी के स्रोत
  - ➤ राजनीतिक स्थिति
  - ➤ हिंद-यवनों का पतन
  - ➤ हिंद-यवनों का योगदान/प्रभाव
- शक/इंडो-सीथियन
  - ➤ जानकारी के स्रोत
  - ➤ शकों की विभिन्न शाखाएँ
  - ➤ महाक्षत्रप 'रुद्रदामन' व उसका जूनागढ़ अभिलेख
- पह्लव/पार्थियन
  - ➤ जानकारी के स्रोत
  - ➤ प्रमुख ऐतिहासिक बिंदु
- कुषाण
  - ➤ जानकारी के स्रोत
  - ➤ राजनीतिक स्थिति
  - ➤ प्रशासनिक स्थिति
  - ➤ सामाजिक स्थिति
  - ➤ धार्मिक स्थिति
  - ➤ आर्थिक स्थिति
  - ➤ कला एवं संस्कृति
- मौर्योत्तरकालीन स्थल व उनकी वर्तमान पहचान
- मौर्योत्तरकालीन रचनाएँ व रचनाकार

परिचय (Introduction)

- लगभग 323 ईसा पूर्व में चंद्रगुप्त मौर्य द्वारा स्थापित तथा सम्राट अशोक के शासनकाल में अपने चरमोत्कर्ष पर पहुँचा महान मौर्य साम्राज्य 185 ईसा पूर्व के आसपास विघटित हो गया। इसी के अवशेषों पर अनेक छोटे-छोटे राज्यों का उदय हुआ। इन्होंने न सिर्फ भारत की राजनीतिक एकता के खंडित होने की सूचना दी, बल्कि राजनीतिक विकेंद्रीकरण की प्रवृत्ति को भी बढ़ावा दिया। वास्तव में, केंद्रीकृत मौर्य साम्राज्य के विघटन के पश्चात् चार देशी और चार विदेशी राज्यों सहित कुल आठ प्रमुख राजवंशों ने भारतीय राजनीतिक रंगमंच पर अपनी-अपनी किस्मत आज़माई। इस प्रक्रिया में उनमें से कुछ तो खासे प्रभावी रहे, तो कुछ इतिहास में अपना नाम दर्ज भर कराने के लिये ही अस्तित्व में आए थे।
- वस्तुतः इन चार देशी राज्यों में शुंग, कण्व, सातवाहन तथा चेदि वंश शामिल थे जबकि चार विदेशी राज्यों में हिंद-यवन, शक/सीथियन, पार्थियन/पह्लव तथा कुषाण राजवंशों का नाम आता है। किंतु, यहाँ हमें स्पष्ट रूप से यह समझ लेना चाहिये कि ये सभी राजवंश कालखंड में क्रमिक रूप में एक के बाद एक अंकित नहीं हुए, बल्कि इनमें से अधिकांश एक-दूसरे के समकालीन उपस्थित थे। इसी बीच यह भी ध्यान देने योग्य है कि उत्तर

भारत व दक्कन में उक्त आठ राजवंशों के समकालीन सुदूर दक्षिण में चोल, चेर तथा पांड्य राज्य भी अपना अस्तित्व बनाए हुए थे। सुदूर दक्षिण के इन राज्यों के काल को 'संगम काल' की संज्ञा दी जाती है। संगम कविताओं में इन तीनों शासक परिवारों को संयुक्त रूप से 'मुवेन्दार' पद से संबोधित किया गया है। इस तमिल शब्द का अर्थ होता है– 'तीन मुखिया'।

- आगे चलकर, समय व परिस्थितियों के अनुरूप इन सभी राजवंशों के मध्य कटुतापूर्ण या मित्रतापूर्ण संबंध भी स्थापित होते रहे। उदाहरण के लिये– जहाँ एक तरफ शुंगों व यवनों के मध्य, चेदि शासक खारवेल व सातवाहनों के मध्य, शकों व सातवाहनों के मध्य, खारवेल व पांड्य के मध्य भयंकर युद्ध हुए, वहीं दूसरी तरफ सातवाहन शासक वशिष्ठीपुत्र पुलुमावी ने शक शासक रुद्रदामन की पुत्री के साथ विवाह करके तथा पराजित पांड्य शासक ने विजेता खारवेल को मुक्तमणियों का उपहार प्रदान करके मित्रतापूर्ण संबंध भी स्थापित किये। फिर इन्हीं कटु और मधुर संबंधों की पृष्ठभूमि में इन राज्यों का भौगोलिक विस्तार भी परिवर्तित होता रहा।
- बहरहाल, इस इकाई के आगामी चरणों में हम उत्तर भारत, पश्चिम भारत व दक्कन में स्थापित होने वाले देशी व विदेशी राज्यों सहित सभी आठ राजवंशों के विभिन्न ऐतिहासिक पहलुओं का अध्ययन करेंगे–

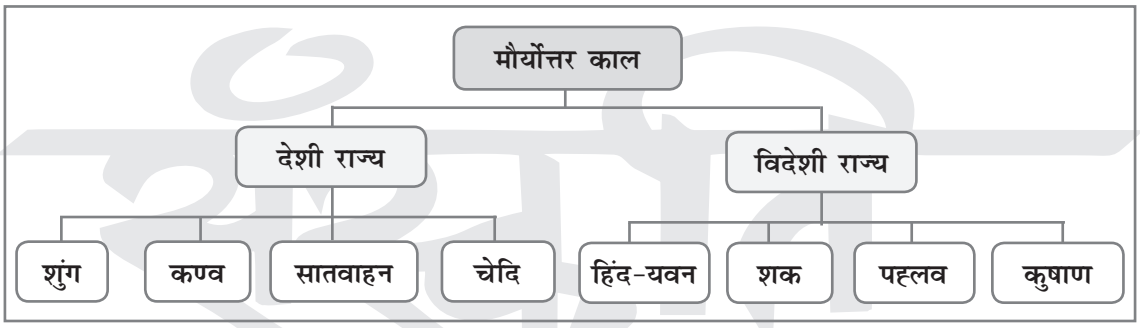

देशी राज्य (Native States)

देशी राज्यों के अंतर्गत हम क्रमशः शुंग वंश, कण्व वंश, सातवाहन वंश तथा चेदि वंश का ऐतिहासिक दृष्टिकोण से अवलोकन करेंगे–

शुंग वंश (185 ईसा पूर्व से 75 ईसा पूर्व) Shunga Dynasty (185 BC to 75 BC)

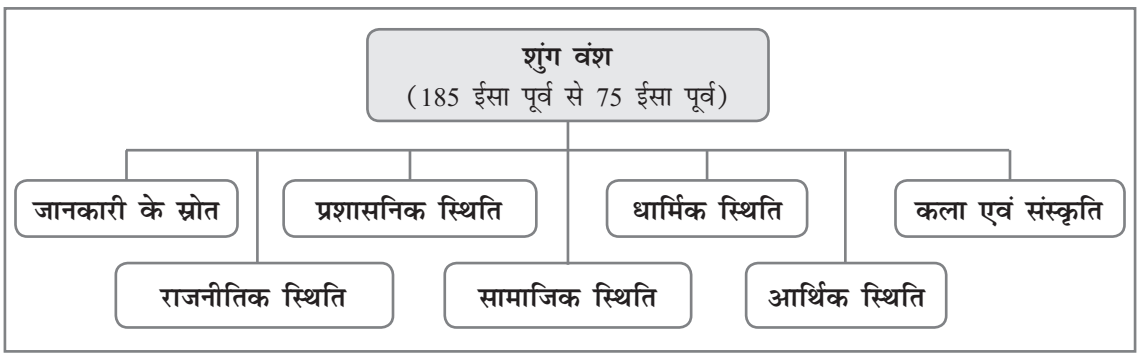

कण्व वंश (75 ई.पू. से 30 ई.पू.) Kanva Dynasty (75 BC to 30 BC)

शुंग वंश का अंतिम शासक 'देवभूति' कमज़ोर व भोग-विलासी प्रवृत्ति का था। 75 ईसा पूर्व में उसके अमात्य 'वसुदेव' ने उसकी हत्या कर दी और 'कण्व अथवा कण्वायन वंश' की स्थापना की। 'सुशर्मा' इस वंश का अंतिम शासक हुआ जिसने 30 ईसा पूर्व तक शासन किया।

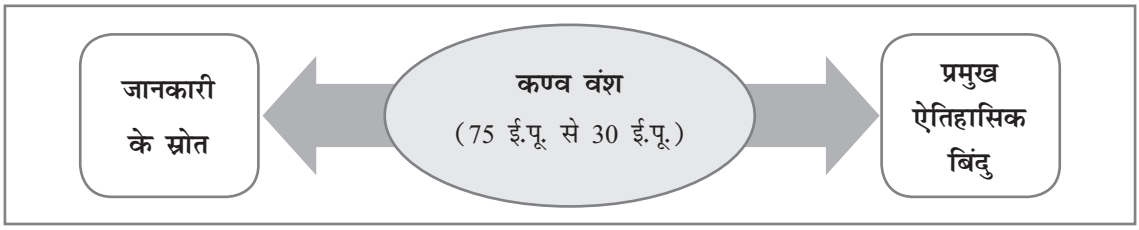

जानकारी के स्रोत (Sources of Information)

- **हर्षचरित :** इसमें उल्लेख है कि शुंगों के अमात्य 'वसुदेव' के षड्यंत्र द्वारा अंतिम शुंग शासक 'देवभूति' मारा गया और 'कण्व वंश' की स्थापना हुई।
- **पुराण :** 'विष्णु पुराण' में उल्लेख किया गया है कि व्यसनी शुंग शासक देवभूति को मारकर उसका अमात्य कण्व वसुदेव पृथ्वी पर शासन करेगा जबकि 'वायु पुराण' में कहा गया है कि अंतिम कण्व शासक सुशर्मा को आंध्रजातीय भृत्य 'सिमुक/सिंधुक' ने मार डाला। पुराणों में ही कण्व शासकों की वंशावली भी दी गई है।

प्रमुख ऐतिहासिक बिंदु (Important Historical Points)

- कण्व शासक भी शुंगों के सामान 'ब्राह्मण' ही थे। अत: इन्होंने भी वैदिक परंपराओं का अनुसरण किया।
- पुराणों से ज्ञात होता है कि इस वंश में कुल 4 शासक हुए जो क्रमश: वसुदेव, भूमिमित्र, नारायण तथा सुशर्मा थे। दुर्भाग्यवश, इस वंश के शासकों के नाम के अतिरिक्त हमारे समक्ष कोई अन्य जानकारी उपलब्ध नहीं है।
- इस वंश के अंतिम शासक सुशर्मा को मारकर सिमुक/सिंधुक ने 'आंध्र-सातवाहन' वंश की स्थापना की।

सातवाहन वंश (Satavahana Dynasty)

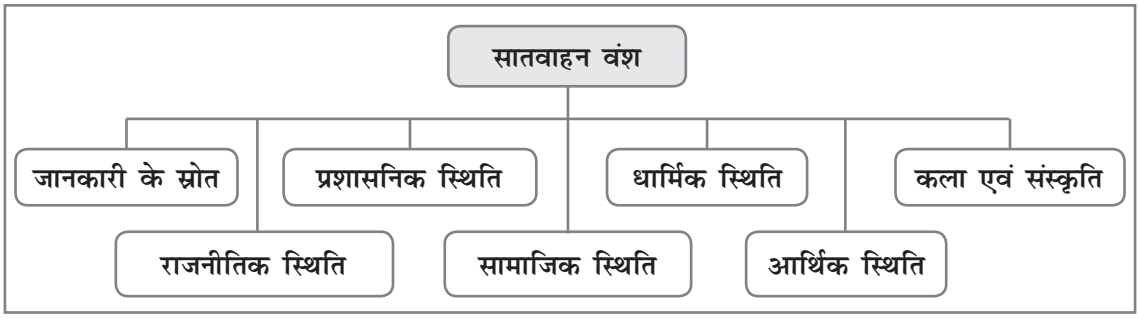

सातवाहन राज्य की स्थापना सिमुक द्वारा कण्व शासकों के अवशेषों पर की गई थी। यह शासन मौर्यों के पश्चात् उदित होने वाले देशी राज्यों में सबसे अधिक महत्त्व रखता है। सातवाहनों का शासन करीब तीन

- गोंडोफर्नीज सबसे प्रसिद्ध पह्लव शासक था जिसने 20-41 ई. तक शासन किया। इसने तक्षशिला को अपनी राजधानी बनाया था। गोंडोफर्नीज को फारसी भाषा में 'बिंदफर्ण' कहा गया है। बिंदफर्ण का अर्थ होता है– यश विजयी। इस शासक के सिक्के सिंध, पंजाब, गांधार, सीस्तान व काबुल घाटी क्षेत्रों से प्राप्त हुए हैं। गोंडोफर्नीज ने 'देवव्रत' की उपाधि धारण की थी।
- गोंडोफर्नीज के शासनकाल की सबसे महत्त्वपूर्ण घटना है– 'सेंट थॉमस' का भारत आगमन, जो ईसाई धर्म का प्रचार करने भारत आए थे। वह गोंडोफर्नीज ही था, जिसे ईसाई जनश्रुतियों में 'अखिल भारत का शासक' कहा गया है।
- अंततः कुषाणों का भारत पर आक्रमण आरंभ हो गया और उन्होंने शनैः-शनैः पह्लवों की सत्ता को समाप्त कर दिया।

कुषाण राजवंश (Kushana Dynasty)

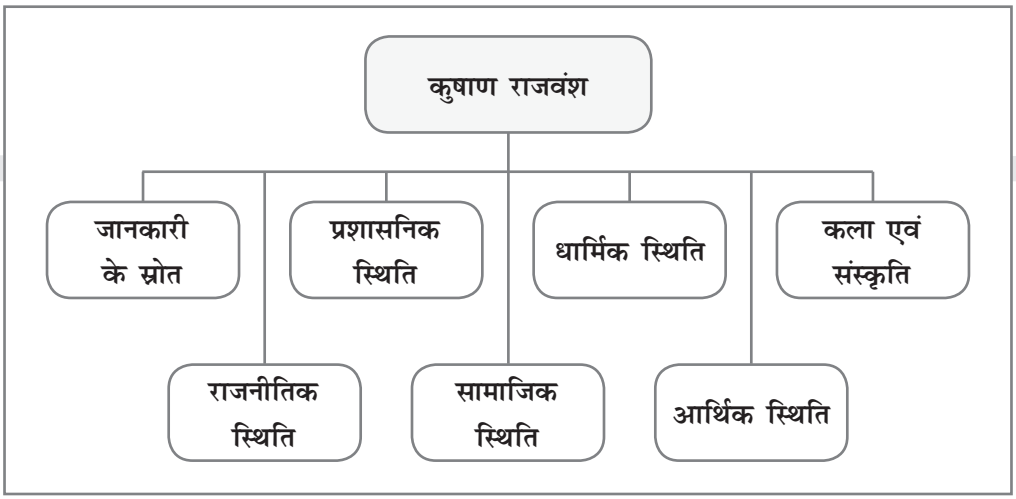

इतिहासकारों ने पह्लवों की सत्ता को समाप्त करने का श्रेय कुषाणों को दिया है। कुषाण मूलतः चीन की यू-ची जनजाति से संबंधित थे जो समय के साथ-साथ पाँच शाखाओं में विभक्त हो गए और इन्हीं में से एक शाखा भारत आई। चीनी भूमि पर कुषाण राज्य की स्थापना का श्रेय 'कुजुल कडफिसस' को दिया जाता है जबकि भारत में कुषाण सत्ता का संस्थापक 'विम कडफिसस' को माना जाता है। कुषाण शासकों में सर्वप्रसिद्ध राजा 'कनिष्क' हुआ। इकाई के आगामी खंड में हम कुषाणों के विविध ऐतिहासिक पहलुओं का क्रमवार अध्ययन करेंगे।

जानकारी के स्रोत (Sources of Information)

कुषाणों के संबंध में हमें साहित्यिक व पुरातात्त्विक दोनों स्रोतों से जानकारी प्राप्त होती है–

साहित्यिक स्रोत (Literary Sources)

- **चीनी विवरण :** 'सिएन-हान-शू' (पान-कु की रचना) और 'हाऊ-हान-शू' (फान-ए की रचना) नामक चीनी ग्रंथों से कुषाणों के आरंभिक इतिहास की जानकारी मिलती है। इसके अलावा ह्वेनसांग एवं फाह्यान जैसे चीनी

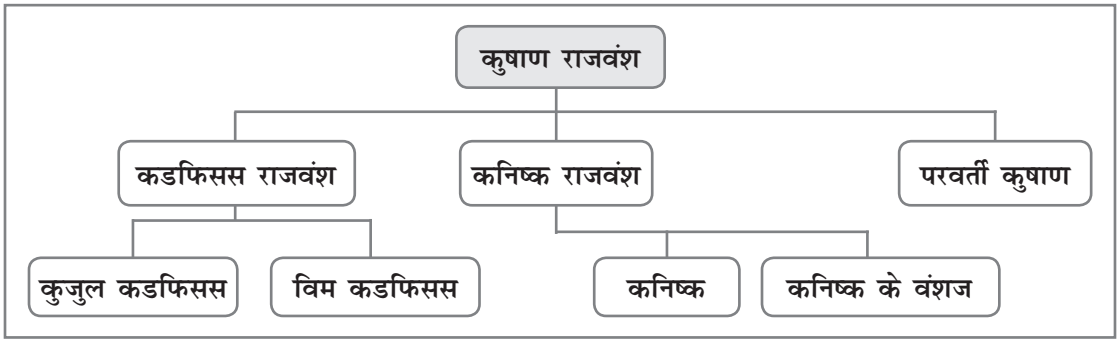

1. कडफिसस राजवंश

(i) कुजुल कडफिसस (15-65 ई.)

- इस शासक का नाम कडफिसस-I था जबकि 'कुजुल' उसकी उपाधि थी। भारत से बाहर इसी को कुषाण सत्ता का संस्थापक माना जाता है। इसके संबंध में हमें 'पान-कु' द्वारा रचित 'सिएन-हान-शू' नामक ग्रंथ से जानकारी प्राप्त होती है। इसके सिक्कों पर उत्कीर्ण 'धर्मथिदस' तथा 'धर्मथित' शब्द से अनुमान लगाया जाता है कि यह बौद्ध धर्म का अनुयायी था।
- इसने रोमन सिक्कों की तर्ज पर केवल ताँबे के सिक्कों का प्रचलन आरंभ किया जो दो विशिष्ट प्रकार के होते थे। इनमें से प्रथम श्रेणी के सिक्कों पर किसी भी प्रकार की उपाधि का अंकन नहीं मिलता तथा इनके अग्रभाग पर यूनानी लिपि में अंतिम यवनराज 'हर्मियस' का नाम उत्कीर्ण है जबकि पृष्ठभाग पर खरोष्ठी लिपि में स्वयं 'कुजुल' का नाम अंकित है। इसका अर्थ है कि कुजुल, हर्मियस के अधीन शासन कर रहा था। द्वितीय श्रेणी के वे सिक्के हैं जिन पर राजकीय उपाधियों का उल्लेख मिलता है।

(ii) विम कडफिसस (65-78 ई.)

- यह 'कडफिसस वंश' का दूसरा शासक था। इसका नाम 'कडफिसस-II' तथा 'विम' इसकी उपाधि थी। इसी ने भारत में कुषाण सत्ता की स्थापना की। इसके संबंध में हमें 'फान-ए' द्वारा रचित 'हाऊ-हान-शू' नामक ग्रंथ से जानकारी प्राप्त होती है। 'विम कडफिसस' ने ताँबे, रजत व स्वर्ण सिक्कों का प्रचलन किया। इसके सिक्कों पर भी यूनानी व खरोष्ठी, दोनों लिपियों में लेख उत्कीर्ण मिले हैं। कडफिसस-II, भारत में स्वर्ण सिक्के जारी करने वाले कुषाण शासकों में प्रथम शासक था। विदित है कि भारत भूमि पर सर्वप्रथम स्वर्ण सिक्के हिंद-यवनों ने जारी किये थे।
- इसके सिक्के, पश्चिम में आक्सस-काबुल घाटी से लेकर पूर्व में सिंध क्षेत्र व मथुरा तक प्राप्त हुए हैं। इस प्रकार, सिक्कों की विभिन्न स्थानों पर उपलब्धता न सिर्फ उसके साम्राज्य विस्तार को इंगित करती है, बल्कि साम्राज्य की समृद्धि की ओर भी इशारा करती है। इसके सिक्कों पर 'महेश्वर' की उपाधि के साथ-साथ नंदी, शिव व त्रिशूल का भी अंकन मिलता है जो विम कडफिसस के शैव मतावलंबी होने की जानकारी देते हैं।
- मथुरा के माट क्षेत्र से सिंहासन पर विराजमान एक बड़ी मूर्ति प्राप्त हुई है जिस पर 'महाराज राजाधिराज देवपुत्र' खुदा हुआ है। विद्वानों का मत है कि यह मूर्ति विम कडफिसस की ही है। कुछ विद्वानों का मत है कि विम के पश्चात् 'सोटर मेगस' उपाधि धारण करने वाले किसी शासक ने अल्पकाल तक शासन किया।

प्रशासनिक स्थिति (Administrative Situation)

- अन्य प्राचीन राजवंशों की भाँति कुषाणों की शासन व्यवस्था भी राजतंत्रात्मक थी। कनिष्क के रवाता व चिरस्तूप अभिलेख से ज्ञात होता है कि उसने 'देवपुत्र' की उपाधि धारण की थी। इससे निष्कर्ष निकलता है कि कुषाण शासक 'राजा की दैवीय उत्पत्ति के सिद्धांत' में विश्वास रखते थे। इस उपाधि का अंकन केवल अभिलेखों पर ही किया गया है, सिक्कों पर नहीं। ऐसा प्रतीत होता है कि कुषाणों ने यह उपाधि चीनी शासकों द्वारा ग्रहण की जाने वाली 'स्वर्गपुत्र' की उपाधि से प्रेरित होकर धारण की होगी। इसके अतिरिक्त, कुषाण शासकों ने षाहि (सामंत), षाहानुषाहि (स्वामी), राजाधिराज आदि उपाधियाँ भी ग्रहण कीं।
- कुषाणों के शासनकाल की सबसे महत्त्वपूर्ण विशेषता थी– 'देवकुल की प्रथा' का आरंभ। इस प्रथा को कुषाणों ने रोमन शासकों से ग्रहण किया था। इस प्रथा के अंतर्गत मृत शासकों की याद में मूर्तियाँ व मंदिर बनवाए जाते थे।
- केंद्रीय स्तर पर राजा को परामर्श देने हेतु किसी परामर्शदात्री संस्था की उपस्थिति का प्रमाण नहीं मिलता, किंतु इस बात के पर्याप्त साक्ष्य मिलते हैं कि कुषाणों ने प्रशासनिक सुविधा की दृष्टि से अपने साम्राज्य को विभिन्न 'क्षत्रपियों' में विभक्त किया था। बड़ी क्षत्रपी का शासक 'महाक्षत्रप', जबकि छोटी क्षत्रपी का शासक 'क्षत्रप' कहलाता था। इन क्षत्रपों का पद वंशानुगत भी हो सकता था और गैर-वंशानुगत भी। कनिष्क के समय मथुरा का महाक्षत्रप 'खरपल्लान' था, जबकि वाराणसी का क्षत्रप 'बनस्पर' था। इसकी जानकारी हमें कुषाणों के सारनाथ अभिलेख से मिलती है। इसी प्रकार, पश्चिमोत्तर क्षेत्र में 'लल्ल' व 'लाइक' नामक क्षत्रपों की उपस्थिति का भी पता चलता है। एक ही राजगद्दी पर दो शासकों की नियुक्ति (द्वैध शासन) की प्रथा भी कुषाणों ने ही प्रारंभ की थी।
- कनिष्क के दरबार में वसुमित्र, अश्वघोष, पार्श्व जैसे बौद्ध विद्वान, चरक जैसे महान चिकित्सक निवास करते थे। इनमें 'अश्वघोष' कनिष्क के राजकवि तथा चरक उसके राजवैद्य थे। 'मार्गभूमिसूत्र' नामक ग्रंथ के रचयिता 'संघरक्ष' कनिष्क के राजपुरोहित थे। एक प्रसिद्ध रसायनशास्त्री 'नागार्जुन' भी कनिष्क के ही समकालीन थे जिन्होंने पारे (पारद) से सोना बनाने की विधि विकसित करने का प्रयास किया। अपने इस प्रयास में वे सोना बनाने में तो सफल नहीं हो सके, मगर सोने के समान एक अत्यंत चमकीली पीली वस्तु के निर्माण में सफल रहे। इसके परिणामस्वरूप, बाद में कृत्रिम आभूषणों के निर्माण का मार्ग प्रशस्त हुआ।
- मथुरा अभिलेख से ज्ञात होता है कि इस दौरान ग्राम प्रशासन की ज़िम्मेदारी 'ग्रामिक' नामक अधिकारी निभाता था, जिसका मूल कर्तव्य होता था– ग्रामीण क्षेत्र से राजस्व की वसूली कर केंद्रीय खजाने में जमा करना।
- इसके अतिरिक्त, कुषाणों के अभिलेखों में पहली बार 'दंडनायक' व 'महादंडनायक' नामक सैन्य अधिकारियों का उल्लेख मिलता है। बेग्राम से प्राप्त घुड़सवार की मृण्मूर्तियाँ संकेत देती हैं कि कुषाणों के पास सशक्त घुड़सवार सेना थी। शक व कुषाण राजाओं ने भारत में लगाम, काठी, रस्सी की रकाब आदि घुड़सवारी के साजो-सामान को लोकप्रिय बनाया। कुषाण शासक सेना का उपयोग जनता पर नियंत्रण हेतु भी किया करते थे।
- विद्वानों का मत है कि कुषाणों की क्षत्रपीय व्यवस्था ने ही आगे चलकर सामंती व्यवस्था को जन्म दिया। हालाँकि, सामंतवाद के उदय में सातवाहनों की भूमि-दान प्रथा का योगदान भी माना जाता है। बहरहाल, कुषाणों की शासन व्यवस्था का सूक्ष्म परीक्षण करने से पता चलता है कि कुषाण-राज्य एक प्रकार का सैनिक-राज्य था। इसलिये परवर्ती कुषाण शासकों की सैन्य अक्षमता के चलते इस राज्य ने अपना अस्तित्व खो दिया।

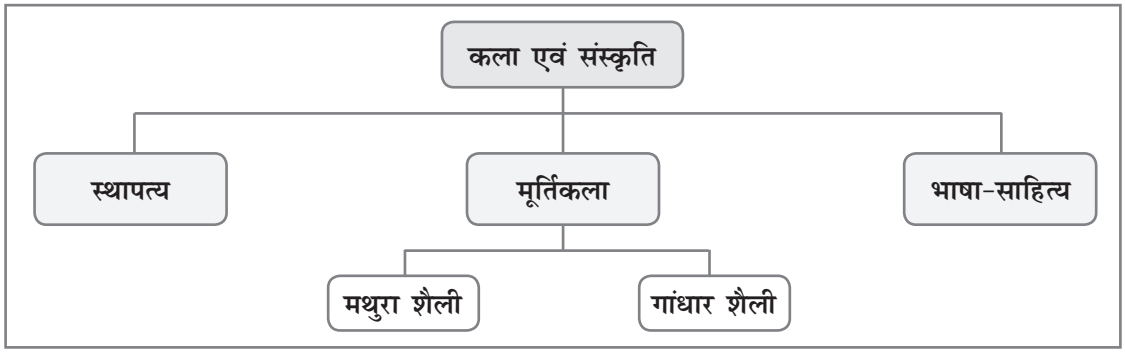

1. स्थापत्य (Architecture)

- जैसा कि हम पहले ज़िक्र कर चुके हैं कि कनिष्क ने अपनी राजधानी पुरुषपुर (पेशावर) में चैत्य व स्तूप का निर्माण करवाया था। वस्तुतः यह चैत्य एक बड़ा संघाराम/विहार था, जिसे लोकप्रिय रूप में 'कनिष्क चैत्य' के नाम से जाना जाता था। इसका वास्तुकार 'आगिलस' नामक एक यवन था। अब यह चैत्य अपने मूल स्वरूप में तो उपस्थित नहीं है, किंतु इसके अवशेष पेशावर के निकट 'शाहजी की ढेरी' नामक स्थल से प्राप्त हुए हैं।
- फाह्यान व ह्वेनसांग के अनुसार कनिष्क ने पेशावर में ही 400 फीट ऊँचे एक स्तूप का निर्माण भी करवाया था। इसके अलावा, रावलपिंडी के निकट मनिक्याल से प्राप्त स्तूप, तक्षशिला में उपस्थित अशोककालीन धर्मराजिका स्तूप का पुनर्निर्माण आदि कुषाणकालीन स्थापत्य के प्रमुख उदाहरण हैं।
- कुषाण शासकों ने विभिन्न नगर भी बसाए। इनमें कनिष्क द्वारा तक्षशिला में बसाया गया 'सिरकप' नगर तथा कश्मीर में बसाया गया 'कनिष्कपुर' नगर प्रमुख हैं। कनिष्कपुर की पहचान कश्मीर में स्थित वर्तमान 'कांसोपुर' से की जाती है। इसके अलावा, हुविष्क द्वारा भी कश्मीर में 'हुष्कपुर' नामक नगर की स्थापना की गई थी।

2. मूर्तिकला (Sculpture)

कुषाणों के शासनकाल में मूर्तिकला का उल्लेखनीय विकास हुआ। इस दौरान मूर्तिकला की शैलियाँ कुषाण शासित गांधार व मथुरा क्षेत्र में विकसित हुईं। इनके फलने-फूलने के स्थान के नाम पर ही इन्हें क्रमशः 'गांधार शैली' व 'मथुरा शैली' नाम दिया गया। इन दोनों ही शैलियों में कुछ समानता व अंतर के बिंदु विद्यमान हैं। इन दोनों ही शैलियों में बुद्ध व बोधिसत्व दोनों की मूर्तियाँ बनाए जाने की प्रथा प्रचलित थी। चूँकि, आप इन दोनों शैलियों को अलग से "कला एवं संस्कृति खंड" के अंतर्गत विस्तार से पढ़ेंगे, इसलिये यहाँ हम मूर्तिकला की इन दोनों शैलियों के केवल प्रमुख बिंदुओं की ही चर्चा करेंगे–

- **मथुरा शैली (Mathura Style)**
  - ➤ वासुदेव शरण अग्रवाल का मत है कि सर्वप्रथम बुद्ध व बोधिसत्व की प्रतिमाओं का निर्माण मथुरा के शिल्पियों द्वारा किया गया था। तत्पश्चात् यह अन्य क्षेत्रों में भी निर्मित की जाने लगीं। महत्त्वपूर्ण बात यह है कि मथुरा शैली के अंतर्गत बौद्ध धर्म के साथ-साथ जैन व हिंदू धर्म से संबंधित मूर्तियों का भी पर्याप्त विकास हुआ।
  - ➤ इस शैली के अंतर्गत निर्मित की जाने वाली मूर्तियों के लिये लाल बलुआ पत्थर, चित्तेदार लाल बलुआ पत्थर एवं रवेदार पत्थर का प्रयोग किया जाता था। बुद्ध की अभय मुद्रा में प्राप्त मूर्ति बेहद प्रभावोत्पादक है। इसके अलावा मैत्रेय (भावी बुद्ध), अवलोकितेश्वर आदि बोधिसत्वों की मूर्तियाँ भी उल्लेखनीय हैं। किंतु, ध्यान देने योग्य बात यह है कि गांधार मूर्तिकला, मथुरा मूर्तिकला से स्वतंत्र रूप में विकसित हुई।

- कनिष्क ने रोमन शासकों की तर्ज़ पर 'देवकुल की प्रथा' आरंभ की।
- कनिष्क द्वितीय ने रोमन शासकों से प्रेरित होकर सीजर (कैसर) की उपाधि धारण की।
- कुषाणों के काल में विकसित गांधार मूर्तिकला पर रोमन प्रभाव स्पष्ट रूप में देखा जा सकता है। इस मूर्तिकला का केंद्रीय तत्त्व भारतीय था, किंतु बाहरी अलंकरण रोमन ढंग से किया गया था। इसी कारण इस शैली को 'हेलेनिस्टिक शैली' के नाम से भी जाना जाता है।

मौर्योत्तरकालीन स्थल व उनकी वर्तमान पहचान

हम एक नज़र उन मौर्योत्तरकालीन प्रदेशों पर भी डाल लेते हैं जिनका उल्लेख विभिन्न मौर्योत्तरकालीन स्रोतों में हुआ है। साथ ही, यह भी समझ लेते हैं कि ये मौर्योत्तरयुगीन प्रदेश वर्तमान में कौन-से स्थलों को इंगित करते हैं–

क्रम संख्या	मौर्योत्तरकालीन स्रोतों में वर्णित प्राचीन स्थल	वर्तमान पहचान
1	अनूप	नर्मदा नदी घाटी क्षेत्र
2	अश्मक	गोदावरी नदी का तटीय क्षेत्र
3	ऋषिक	कृष्णा नदी का तटीय क्षेत्र
4	स्वभ्र	साबरमती नदी का तटीय क्षेत्र
5	सिंध	निचली सिंधु घाटी का पश्चिमी क्षेत्र
6	सौवीर	निचली सिंधु घाटी का पूर्वी क्षेत्र
7	आकर	पूर्वी मालवा क्षेत्र
8	अवंति	पश्चिमी मालवा क्षेत्र
9	ऋक्षवत	मालवा के दक्षिण में स्थित विंध्याचल पर्वत
10	पारियात्र	पश्चिमी विंध्याचल व अरावली
11	कुकुर	पश्चिमी राजपूताना
12	मरु	राजस्थान का मारवाड़ क्षेत्र
13	निषाद	हरियाणा व उत्तरी राजस्थान का क्षेत्र
14	मूलक	प्रतिष्ठान/पैठान का समीपवर्ती क्षेत्र
15	विदर्भ	बरार
16	आनर्त	उत्तरी काठियावाड़
17	सौराष्ट्र	दक्षिणी काठियावाड़
18	अपरांत	उत्तरी कोंकण क्षेत्र
19	महेंद्र	पूर्वी घाट
20	मलय	त्रावणकोर पहाड़ियाँ
21	सह्य/सह्याद्री	नीलगिरी पहाड़ियों के उत्तर में स्थित पश्चिमी घाट
22	धान्यकटक/धरणीकोटा	अमरावती

23	विजयपुरी	नागार्जुनकोंडा
24	यौधेय गणराज्य	पूर्वी पंजाब
25	कनिष्कपुर	कांसोपुर (कश्मीर)

मौर्योत्तरकालीन रचनाएँ व रचनाकार

मौर्योत्तर काल में लिखी गई या इस काल के बारे में जानकारी प्रदान करने वाली प्रमुख साहित्यिक रचनाएँ व उनके रचनाकारों का विवरण इस प्रकार है–

क्रम सं.	रचनाकार	प्रमुख रचनाएँ
1	गुणाढ्य	बृहत्कथा
2	शर्ववर्मन्	'कातंत्र' (संस्कृत व्याकरण)
3	हाल	गाथासप्तशती
4	वात्स्यायन	कामसूत्र (गैर-धार्मिक साहित्य)
5	पाणिनि	अष्टाध्यायी
6	पतंजलि	महाभाष्य (अष्टाध्यायी पर टीका)
7	क्षेमेंद्र	अवदानकल्पलता, बृहत्कथामंजरी, रामायणमंजरी, भारतमंजरी
8	सोमदेव	कथा-सरित्सागर
9	बाणभट्ट	हर्षचरित
10	भास	स्वप्नवासवदत्ता
11	अश्वघोष	**संस्कृत महाकाव्य–** बुद्धचरित, सौंदरानंद **नाटक–** शारिपुत्रप्रकरण
12	वसुमित्र	विभाषाशास्त्र
13	भरत मुनि	नाट्यशास्त्र
14	चरक	चरक संहिता
15	सुश्रुत	सुश्रुत संहिता (शल्य/चीर-फाड़ चिकित्सा पर केंद्रित)
16	नागसेन	मिलिंदपन्हो
17	वराहमिहिर	वृहज्जातक, बृहत्संहिता, पंचसिद्धांतिका
18	शूद्रक	मृच्छकटिकम्
19	कालिदास	मालविकाग्निमित्रम्
20	विशाखदत्त	मुद्राराक्षस, देवीचंद्रगुप्तम्
21	राजशेखर	काव्यमीमांसा
22	कात्यायन	वार्त्तिक
23	कल्हण	राजतरंगिणी
24	नागार्जुन	प्रज्ञापारमितासूत्र

❑❑❑

इकाई

9

गुप्त साम्राज्य
(Gupta Empire)

- पृष्ठभूमि
- जानकारी के स्रोत
  - साहित्यिक स्रोत
  - पुरातात्त्विक स्रोत
- राजनीतिक स्थिति
  - चंद्रगुप्त प्रथम
  - समुद्रगुप्त
  - चंद्रगुप्त द्वितीय 'विक्रमादित्य'
  - कुमारगुप्त प्रथम
  - स्कंदगुप्त 'क्रमादित्य'
- प्रशासनिक स्थिति
  - केंद्रीय प्रशासन
  - प्रांतीय प्रशासन
  - ज़िला प्रशासन
  - नगरीय प्रशासन
  - स्थानीय प्रशासन
  - न्याय प्रशासन
  - सैन्य प्रशासन
- आर्थिक स्थिति
- सामाजिक स्थिति
- धार्मिक स्थिति
- कला एवं संस्कृति
  - स्थापत्य कला
    - स्तूप निर्माण कला
    - गुहा निर्माण कला
    - मंदिर निर्माण कला
  - मूर्तिकला
  - चित्रकला
    - अजंता चित्रकला
    - बाघ चित्रकला
  - शिक्षा एवं साहित्य
  - विज्ञान एवं तकनीक

पृष्ठभूमि (Background)

- मौर्य साम्राज्य के पतन के पश्चात् लंबे समय तक कोई विशाल साम्राज्य अस्तित्व में नहीं आ सका। यद्यपि सातवाहनों ने दक्कन में अपने राज्य का विस्तार किया तथा इसी समय उत्तर में कुषाण शासकों ने अपना साम्राज्य स्थापित किया। कालांतर में तीसरी सदी के मध्य तक इन दोनों साम्राज्यों का पतन आरंभ हो गया था।
- अंततः कुषाण साम्राज्य के विघटन के पश्चात् उत्तर भारत में गुप्त साम्राज्य का उदय हुआ जिसने कुषाण शासकों को पराजित कर उसके व्यापक भाग पर अपना अधिकार स्थापित कर लिया। संभवतः ये कुषाणों के सामंत थे।
- गुप्त काल के शासकों के लिये वर्तमान उत्तर प्रदेश राज्य का क्षेत्र अधिक महत्त्वपूर्ण माना जाता है, क्योंकि आरंभिक गुप्तवंश के शासकों से संबंधित मुद्राएँ एवं अभिलेख मुख्य रूप से यहीं पर पाए गए हैं।

जानकारी के स्रोत (Source of Information)

साहित्यिक स्रोत (Literary Source)

- गुप्तकालीन इतिहास के अध्ययन स्रोत पर्याप्त प्रामाणिक हैं। साहित्यिक स्रोत के अंतर्गत गुप्तकालीन पुराण, काव्य, नाटक, स्मृतियाँ आदि शामिल हैं। पुराणों के अंतर्गत विष्णु पुराण, वायु पुराण एवं ब्राह्मण पुराण से गुप्तों के इतिहास एवं उनकी राज्य सीमा के बारे में पर्याप्त जानकारी मिलती है।
- सुप्रसिद्ध नाटककार विशाखदत्त ने 'देवीचंद्रगुप्तम्' नाटक की रचना की। इस नाटक में चंद्रगुप्त द्वारा अपने भाई रामगुप्त का वध तथा उसकी पत्नी ध्रुवस्वामिनी के साथ विवाह एवं उसके राज्याभिषेक का उल्लेख किया गया है।
- कालिदास ने ऋतुसंहारम्, कुमारसंभवम्, मेघदूतम्, रघुवंशम्, मालविकाग्निमित्रम्, विक्रमोवर्शीयम् एवं अभिज्ञानशाकुंतलम् आदि महत्त्वपूर्ण ग्रंथों की रचना की। ये कृतियाँ गुप्तकालीन इतिहास पर विशेष प्रकाश डालती हैं।

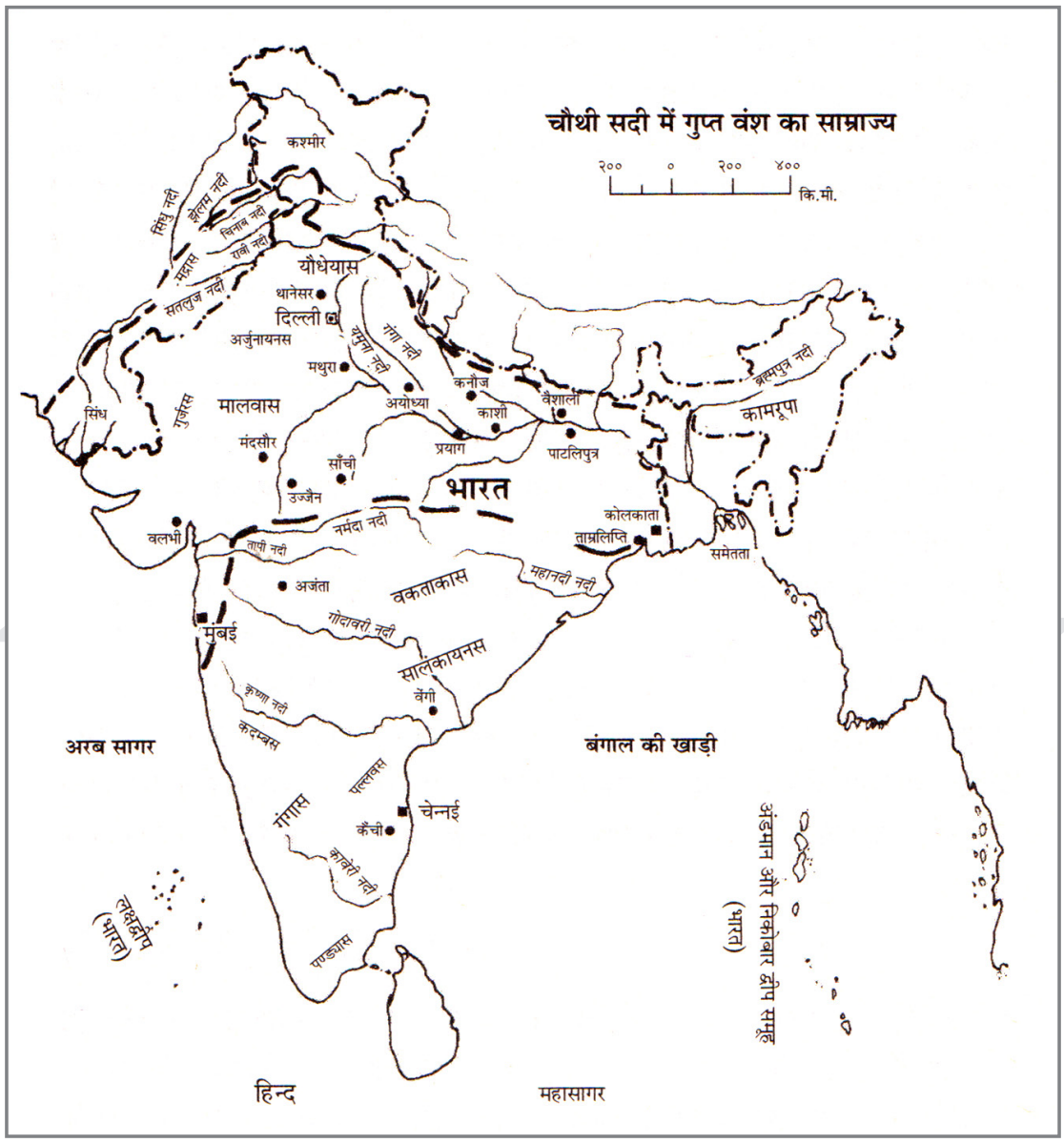

- स्कंदगुप्त की मृत्यु के पश्चात् परवर्ती गुप्त शासकों के शासनकाल में सामंतों की स्वतंत्रता की प्रवृत्ति एवं हूणों के निरंतर होते आक्रमणों ने गुप्त साम्राज्य की शक्ति को क्षीण कर दिया। परिणामतः आगामी गुप्त शासकों, जैसे– पुरुगुप्त, बुधगुप्त, भानुगुप्त आदि के साथ ही गुप्त साम्राज्य का अंत एवं नवीन वंशों, जैसे– पुष्यभूति, मैत्रकों आदि का उदय भी होने लगा।
- स्कंदगुप्त ने नालंदा संघाराम को सहायता प्रदान की थी। इसने चीन के साथ अच्छे संबंध रखने के लिये 466 ई. में चीन के सम्राट सांग के दरबार में अपना एक राजदूत भी भेजा था। इसके अलावा, स्कंदगुप्त द्वारा धारण की गई उपाधियों में शक्रादित्य, परमभागवत आदि की भी चर्चा मिलती है।

प्रमुख शासक	उपाधियाँ
श्रीगुप्त	आदिराज, महाराज
घटोत्कच	महाराज
चंद्रगुप्त-I	महाराजाधिराज
समुद्रगुप्त	पराक्रमांक
चंद्रगुप्त-II	विक्रमादित्य
कुमारगुप्त	महेंद्रादित्य
स्कंदगुप्त	शक्रादित्य, शक्रोपम, क्रमादित्य

प्रशासनिक स्थिति (Administrative Situation)

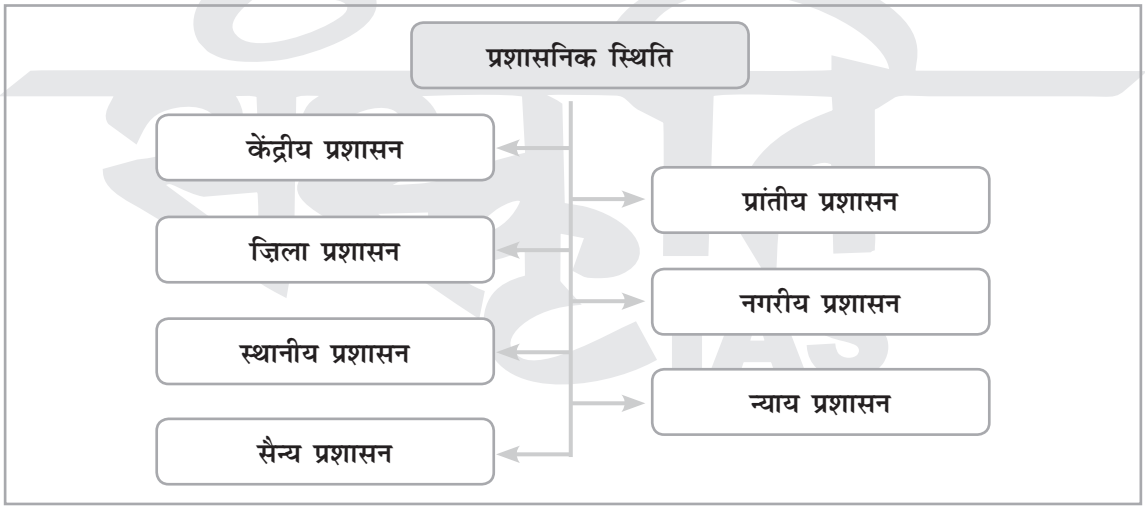

- 300-650 ई. के मध्य प्राचीन भारत में स्थापित गुप्तों की सत्ता ने अपनी सैन्य शक्ति के बल पर विशाल साम्राज्य की स्थापना की जिस पर प्रभावी नियंत्रण को बनाए रखने हेतु सुव्यवस्थित प्रशासनिक प्रणाली भी स्थापित की गई थी।
- प्रशासन का सर्वोच्च अधिकारी राजा होता था तथा प्रशासनिक शक्तियाँ राजा में निहित होती थीं। यह कार्यपालिका का सर्वोच्च अधिकारी, प्रधान न्यायाधीश तथा सेना का सर्वोच्च सेनापति होता था।
- प्रशासन के सभी उच्च पदाधिकारियों को राजा द्वारा ही नियुक्त किया जाता था और वे सभी सम्राट के प्रति उत्तरदायी होते थे।
- गुप्त काल में सामंतवाद का भी उदय हो चुका था। इस काल में पूर्वी मालवा में सनकानिक, बुंदेलखंड में परिव्राजक एवं उच्चकल्प वंश के शासक गुप्तों के सामंत हुआ करते थे।

- गुप्तकालीन प्रसिद्ध मंदिरों की सूची इस प्रकार है–

गुप्तकालीन प्रसिद्ध मंदिर	स्थान
तिगवा का विष्णु मंदिर	जबलपुर, मध्य प्रदेश
भूमरा का शिव मंदिर	नागोद, मध्य प्रदेश
खोह का शिव मंदिर	नागोद, मध्य प्रदेश
नचनाकुठार का पार्वती मंदिर	पन्ना, मध्य प्रदेश
देवगढ़ का दशावतार मंदिर	झाँसी, उत्तर प्रदेश
भीतरगाँव का मंदिर	कानपुर, उत्तर प्रदेश
सिरपुर का लक्ष्मण मंदिर	छत्तीसगढ़
उदयगिरि का विष्णु मंदिर	विदिशा, मध्य प्रदेश
लाडखाँ का मंदिर	मध्य प्रदेश
दर्रा का मंदिर	कोटा, राजस्थान

मूर्तिकला (Sculpture)

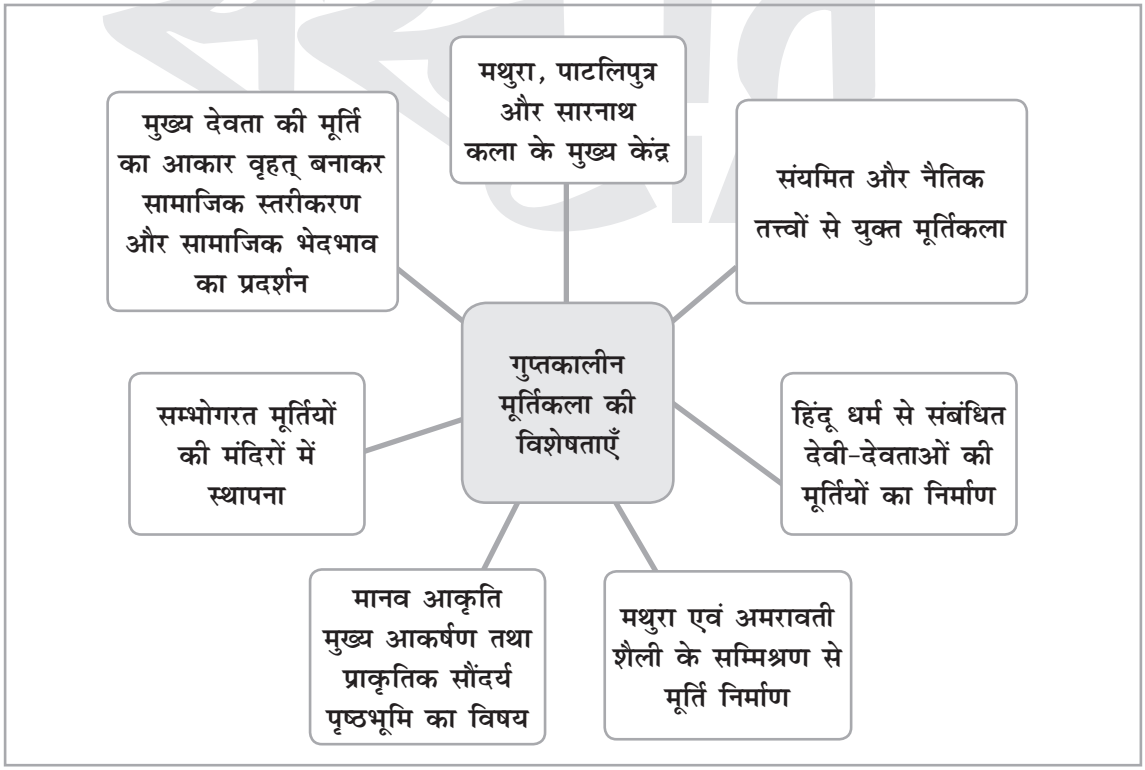

इकाई

10

गुप्तोत्तर काल
(Post Gupta Period)

- परिचय
- वल्लभी का मैत्रक वंश
- मालवा के यशोधर्मन
- कन्नौज का मौखरी वंश
- बंगाल का गौड़ वंश
- स्थानेश्वर का पुष्यभूति वंश
  - ➤ हर्षवर्द्धन
    - ■ हर्षकालीन प्रशासनिक स्थिति
    - ■ हर्षकालीन आर्थिक स्थिति
    - ■ हर्षकालीन सामाजिक स्थिति
    - ■ हर्षकालीन धार्मिक स्थिति
    - ■ हर्षकालीन साहित्य
    - ■ हर्ष के बाद की स्थिति

परिचय (Introduction)

- प्राचीन भारत के राजनीतिक इतिहास में गुप्त वंश के पतन के पश्चात् विकेंद्रीकरण एवं क्षेत्रीयता की भावना का विकास हुआ जिसने क्षेत्रीय शासकों एवं सामंतों को भिन्न-भिन्न क्षेत्रों में सत्ता संभालने के लिये प्रेरित किया।
- इस समय कुछ विशाल शक्तियों की स्थापना हुई, किंतु गुप्तोत्तर काल के दौरान किसी भी शक्ति ने अखिल भारतीय स्वरूप ग्रहण नहीं किया। इस काल की छोटी-बड़ी सभी शक्तियाँ परस्पर संघर्षों में उलझी रहीं।
- गुप्तोत्तर काल में उत्तर एवं पश्चिम भारत की राजनीति में जिन क्षेत्रीय शक्तियों का उदय हुआ उनमें वल्लभी का मैत्रक वंश, मालवा के यशोधर्मन, कन्नौज का मौखरी वंश, बंगाल का गौड़ वंश, थानेश्वर का पुष्यभूति वंश प्रमुख है।

वल्लभी का मैत्रक वंश (Maitraka Dynasty of Vallabhi)

- गुप्त काल में सौराष्ट्र, गुप्त शासकों का अधीनस्थ प्रांत था जहाँ मैत्रक वंश की स्थापना भट्टार्क नामक व्यक्ति ने की थी। इन्होंने वल्लभी को अपनी राजधानी बनाया।
- पश्चिमी भारत के एक सर्वाधिक शक्तिशाली राज्य के रूप में वल्लभी का उदय हुआ, जिसका विस्तार गुजरात, कच्छ एवं पश्चिमी मालवा तक ही था।
- इस वंश के आरंभिक नरेश गुप्त सम्राटों के यहाँ सामंत के रूप में कार्य करते थे। किंतु, पाँचवीं सदी के अंत तक इस वंश के उत्तराधिकारियों ने सौराष्ट्र में गुप्त वंश की अधीनता से मुक्त होकर अपनी शक्तिशाली सत्ता को स्थापित कर लिया था। ध्रुवसेन द्वितीय, इस राजवंश का सबसे शक्तिशाली शासक था। यह हर्ष का समकालीन था।
- इसी के समय में ह्वेनसांग भारत आया था। ह्वेनसांग के यात्रा वृत्तांत में ध्रुवसेन द्वितीय का उल्लेख मिलता है जिसमें उसे बौद्ध धर्म का संरक्षक बताया गया है।
- शिलादित्य सप्तम, मैत्रक वंश का अंतिम शासक था। आठवीं सदी के उत्तरार्द्ध में अरब आक्रमणकारियों ने मैत्रक वंश के अंतिम राजा की हत्या करके वल्लभी को पूर्ण रूप से छिन्न-भिन्न कर दिया।

इकाई

11

दक्षिण भारत का इतिहास
(History of South India)

- पृष्ठभूमि
- चालुक्य वंश
  - ➤ राजनीतिक स्थिति
    - ■ बादामी के चालुक्य
    - ■ कल्याणी के चालुक्य
  - ➤ प्रशासनिक स्थिति
  - ➤ धार्मिक स्थिति
  - ➤ कला एवं संस्कृति
    - ■ स्थापत्य कला
    - ■ मूर्तिकला
    - ■ चित्रकला
    - ■ साहित्य
- राष्ट्रकूट वंश
  - ➤ राजनीतिक स्थिति
  - ➤ प्रशासनिक स्थिति
  - ➤ कला एवं संस्कृति
    - ■ स्थापत्य कला
    - ■ मूर्तिकला
    - ■ चित्रकला
    - ■ साहित्य
- पल्लव वंश
  - ➤ राजनीतिक स्थिति
  - ➤ प्रशासनिक स्थिति
  - ➤ धार्मिक स्थिति
  - ➤ कला एवं संस्कृति
    - ■ स्थापत्य कला
    - ■ मूर्तिकला
    - ■ साहित्य
- चोल वंश
  - ➤ राजनीतिक स्थिति
  - ➤ प्रशासनिक स्थिति
  - ➤ धार्मिक स्थिति
  - ➤ कला एवं संस्कृति
    - ■ स्थापत्य कला
    - ■ मूर्तिकला
    - ■ साहित्य

पृष्ठभूमि (Background)

- गुप्तवंश के पतन के पश्चात् लगभग एक सहस्राब्दी तक विकेंद्रीकरण और क्षेत्रीयता की भावना का प्रसार हुआ। इस समय भारतीय उपमहाद्वीप में कई विशाल शक्तियों का उदय हुआ, किंतु किसी भी राजवंश ने अखिल भारतीय स्वरूप को ग्रहण नहीं किया।
- हर्यक वंश से लेकर गुप्त काल तक लगभग हज़ार वर्षों तक मगध सर्वोच्च राज्य के रूप में स्थापित रहा जो गुप्त काल के पश्चात् उत्पन्न हुई अस्थिर परिस्थितियों के कारण अपनी पूर्ववत स्थिति में लौट गया। यही कारण है कि गुप्तोत्तर काल में उत्तरी भारत में हर्षवर्द्धन को छोड़कर किसी भी महत्त्वपूर्ण शक्ति का उदय न हो सका।
- इसके विपरीत लगभग 550-750 ई. के दौरान दक्षिण भारत राजनीतिक गतिविधियों का प्रमुख केंद्र बना रहा जहाँ गुप्तोत्तर काल में विभिन्न महत्त्वपूर्ण शक्तियों का उदय हुआ।

- 914-922 ई. के दौरान इंद्र तृतीय राष्ट्रकूट का शासक बना। इसके शासनकाल में अल मसूदी ने भारत की यात्रा की।
- राष्ट्रकूट वंश के योग्यतम शासकों में कृष्ण तृतीय का स्थान आता है जिसने अकालवर्ष, पृथ्वीवल्लभ जैसी उपाधियों को धारण किया। इसने 949 ई. में 'तक्कोलम' नामक स्थान पर चोल शासक परांतक प्रथम को पराजित किया तथा चोल राज्य के उत्तरी भाग पर अधिकार कर लिया। कृष्ण तृतीय के दरबार में विद्वानों को भी आश्रय प्राप्त हुआ जिसमें कवि पंपा एवं पोन्न का नाम प्रमुख था। कवि पोन्न ने 'शांतिपुराण' की रचना की थी।
- राष्ट्रकूट राजवंश का अंतिम शासक कर्क द्वितीय था। 974 ई. में इसके अंत के साथ ही दो सदियों से दक्षिण भारत में चल रही राष्ट्रकूटों की सत्ता का भी समापन हो गया।

प्रशासनिक स्थिति (Administrative Situation)

- राष्ट्रकूट राजवंश में शासक की स्थिति सर्वाधिक महत्त्वपूर्ण एवं सर्वोच्च होती थी। इस काल के शासकों ने महाराजाधिराज, परमभट्टारक जैसी सम्मानजनक उपाधियों के अलावा अकालवर्ष, धारावर्ष, सुवर्णवर्ष, जगत्तुंग आदि व्यक्तिगत विरुदों को भी धारण किया।
- राष्ट्रकूट प्रशासन में सामंतवाद पूर्ण रूप से स्थापित हो चुका था। सामंतों के अधीन क्षेत्रों का प्रबंध सामंत किया करते थे। प्रमुख सामंतों के अधीन छोटे सामंत होते थे जिन्हें राजा कहा जाता था।
- शासक के अधीन नियंत्रण वाले क्षेत्रों को राष्ट्र में विभक्त किया जाता था। राष्ट्र को मंडल भी कहा जाता था। इसका प्रधान अधिकारी राष्ट्रपति होता था जो नागरिक और सैनिक दोनों प्रकार के कार्यों को देखता था।
- प्रत्येक राष्ट्र में कई विषय सम्मिलित होते थे। विषय के प्रमुख अधिकारी को विषयपति कहा जाता था।
- विषय को भुक्तियों में विभाजित किया जाता था। इसके प्रधान को भोगपति कहा जाता था। विषयपति और भोगपति 'देशग्रामकूट' नामक वंशानुगत राजस्व अधिकारी की सहायता से राजस्व विभाग के प्रशासनिक कार्यों को देखते थे।
- प्रत्येक भुक्ति के अधीन 50 से लेकर 70 ग्राम आते थे। ग्राम का प्रशासन ग्रामकूट, ग्रामपति या गावुंड के द्वारा संपन्न किया जाता था। इसका प्रमुख कार्य भूमिकर एकत्रित करके राजकोष में जमा करना होता था। साथ ही, ये ग्राम में शांति एवं व्यवस्था की स्थापना के लिये भी कार्य करते थे।
- राष्ट्रकूट राजवंश में आय का प्रमुख साधन भूमिकर होता था जिसे उद्रंग या भोगकर कहते थे। यह उपज का चौथा भाग होता था जिसे अनाज के रूप में लिया जाता था।

कला एवं संस्कृति (Art & Culture)

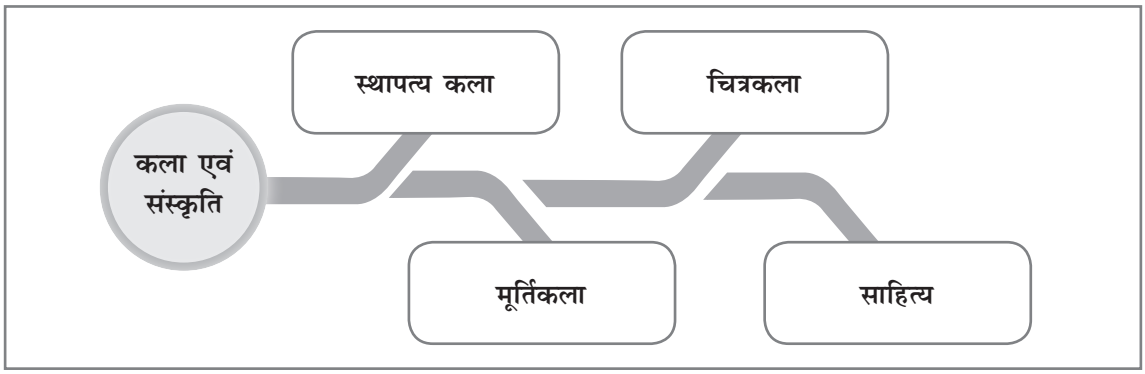

इकाई

12

संगम काल (Sangam Age)

- पृष्ठभूमि : महापाषाण संस्कृति
  - ➤ महापाषाणिक स्मारकों के प्रकार
  - ➤ महापाषाण संस्कृति की सामान्य विशेषताएँ
- संगम काल : परिचय
  - ➤ जानकारी के स्रोत
    - ■ संगम साहित्य
    - ■ संगम महाकाव्य
  - ➤ तीन संगमों का आयोजन
  - ➤ राजनीतिक स्थिति
    - ■ चोल राजवंश
    - ■ चेर राजवंश
    - ■ पांड्य राजवंश
  - ➤ प्रशासनिक स्थिति
  - ➤ सामाजिक स्थिति
  - ➤ धार्मिक स्थिति
  - ➤ आर्थिक स्थिति
  - ➤ कला एवं स्थापत्य
  - ➤ संगमकालीन प्रमुख शब्दावलियाँ

पृष्ठभूमि : महापाषाण संस्कृति (Background : The Megalith Culture)

- 'मेगालिथ' (Megalith) शब्द की उत्पत्ति ग्रीक शब्दों 'मेगास' (Megas) व 'लिथॉस' (Lithos) से हुई है जिनका अर्थ क्रमशः 'बड़ा/महा' तथा 'पत्थर/पाषाण' होता है। सर्वप्रथम, कर्नल मीडोज ने 1852 से 1862 ई. की समयावधि के दौरान कर्नाटक के 'शोरापुर-दोआब' क्षेत्र में खोज अभियान चलाया और वहाँ से विशाल पाषाण संरचनाएँ प्राप्त कीं। चूँकि, ये संरचनाएँ विशिष्ट प्रकार की कब्रें थीं, जिनके निर्माण हेतु बड़े-बड़े पत्थरों का प्रयोग किया गया था, इसलिये इस संस्कृति को 'महापाषाण संस्कृति' का नाम दिया गया।
- विंध्य पर्वत से लेकर दक्षिण में कन्याकुमारी तक फैले विस्तृत भू-भाग को 'दक्षिण भारत' के नाम से जाना जाता है। भारत का यह त्रिभुजाकार प्रदेश तीन ओर से समुद्र से घिरा होने के कारण 'प्रायद्वीपीय भारत' कहलाता है। सुदूर दक्षिण के क्षेत्र को 'तमिलकम् या तमिषकम्' कहा जाता है। वस्तुतः महापाषाण संस्कृति का विस्तार मुख्यतः दक्षिण भारत में था, किंतु इसके कुछ साक्ष्य भारत के अन्य भागों में भी प्राप्त हुए हैं।

महापाषाणिक स्मारकों के प्रकार (Types of Megalithic Monuments)

- वी.डी. कृष्णस्वामी द्वारा महापाषाण कब्रों को उनकी संरचना के आधार पर तीन वर्गों में विभाजित किया गया है–
  - ➤ कक्षयुक्त कब्रें
  - ➤ कक्षविहीन कब्रें
  - ➤ कब्रविहीन स्मारक
- **कक्षयुक्त कब्रें :** आकृति की दृष्टि से ये कब्रें चौकोर, समकोण, आयताकार, विषम चतुर्भुजाकार इत्यादि हैं। इनके निर्माण हेतु चारों ओर पत्थर के टुकड़ों को खड़ा करके ऊपर से ढक दिया जाता था। इस प्रकार की कब्रों में प्रवेश करने हेतु एक विशिष्ट छिद्र (Port-hole) भी होता था।

- इनके द्वारा लाल तथा काले मृद्भाँडों का प्रयोग किया जाता था। ये मृद्भाँड भीतर से तथा मुँह के पास से तो काले होते थे, किंतु इनका शेष भाग लाल होता था। ये लोग मिट्टी के बर्तनों के निर्माण हेतु चॉक का प्रयोग करते थे तथा उन बर्तनों को आग में पकाते थे।
- इस संस्कृति के लोगों द्वारा मिट्टी के बर्तनों के साथ-साथ ताँबे व काँसे के बर्तन भी उपयोग में लाए जाते थे।

समय के साथ-साथ महापाषाण संस्कृति के लोग पहाड़ों की ढलान से नीचे मैदानों में आने लगे। उनके द्वारा प्रयोग किये जाने वाले लौह-उपकरणों से मैदानों में उपस्थित घने जंगलों को साफ करना आसान हो गया। इससे न सिर्फ कृषि को बढ़ावा मिला, बल्कि राज्यों के उदय के लिये भी उपयुक्त परिस्थितियाँ निर्मित होने लगीं। इसी पृष्ठभूमि में आगे चलकर दक्षिण भारत के क्षेत्रों में चोल, चेर व पांड्य राज्यों का उदय हुआ। इन तीनों राज्यों के शासनकाल को संयुक्त रूप से 'संगम काल' के नाम से जाना जाता है।

संगम काल : परिचय (Sangam Age : Introduction)

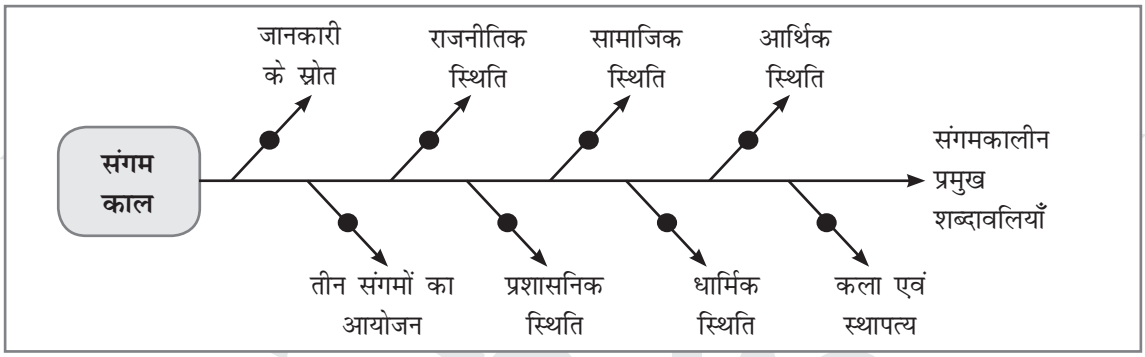

- महापाषाण संस्कृति के अंतिम चरण में कृष्णा नदी के दक्षिण में राज्य निर्माण की जो प्रक्रिया आरंभ हुई, उसे चोल, चेर व पांड्य राजवंशों ने नेतृत्व प्रदान किया। इन तीनों राजवंशों का शासनकाल 'संगम काल' के नाम से प्रसिद्ध है। इनके विषय में जानकारी मुख्य रूप से तमिल भाषा में रचित 'संगम साहित्य' से प्राप्त होती है।
- संस्कृत भाषा के शब्द 'संगम' से आशय एक ऐसे संघ या सम्मेलन से है जिसमें विभिन्न तमिल कवि व विद्वान एकत्रित होते थे और अपनी साहित्यिक रचनाएँ प्रस्तुत करते थे। इस दौरान प्रस्तुत की गई रचनाओं को विचार-विमर्श के पश्चात् स्वीकृति प्रदान की जाती थी, तत्पश्चात् ये रचनाएँ प्रकाशित होती थीं। इन संगमों को एवं यहाँ उपस्थित विद्वानों को राजकीय संरक्षण प्राप्त होता था। संपूर्ण संगम काल में कुल तीन संगमों का आयोजन हुआ। इन तीनों ही गोष्ठियों को पांड्य शासकों ने संरक्षण प्रदान किया।
- इन संगमों के दौरान संकलित हुए ग्रंथों को ही 'संगम साहित्य' कहा जाता है। इन संगम साहित्यों में जो भी ग्रंथ मूल रूप में रचे गए थे, वे सभी हमारे पास उपलब्ध नहीं हैं। इतना ही नहीं इन साहित्यों के रचनाकाल के विषय में तो विद्वान एकमत नहीं हैं, किंतु यह निश्चित है कि वर्तमान में जितने भी संगम साहित्य अभी उपस्थित हैं, उनका संकलन 300-600 ई. के मध्य हुआ था। विभिन्न विद्वानों में श्री निवास आयंगर ने 500 ई.पू. से 500 ई. के मध्य संगम युग की समयावधि निर्धारित की है। किंतु, समेकित रूप में संगम काल की कालावधि सामान्यत: प्रथम सदी से तीसरी सदी के मध्य तक मानी जाती है।

इस प्रकार, हमने यह जाना कि संगम काल की राजनीतिक व्यवस्था चोल, चेर व पांड्य राजवंशों का संयुक्त रूप है। सुदूर दक्षिण में उपस्थित इन तीन राजवंशों की प्रशासनिक, सामाजिक, आर्थिक व्यवस्थाएँ भी लगभग समरूप प्रतीत होती हैं। आगे हम इन्हीं संगमकालीन व्यवस्थाओं का क्रमवार अध्ययन करेंगे।

प्रशासनिक स्थिति (Administrative Condition)

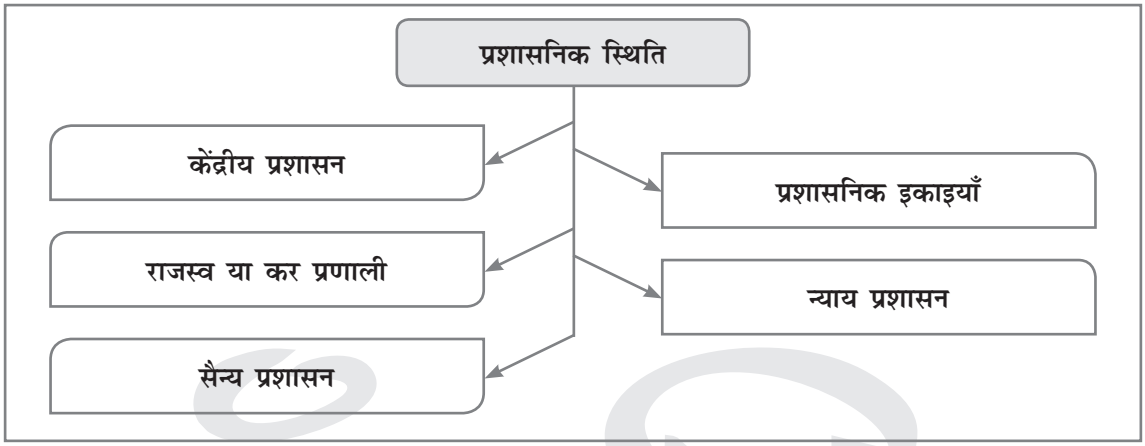

- अंत्येष्टि संस्कारों में अग्निदाह व समाधीकरण दोनों प्रथाएँ उपस्थित थीं। दाह संस्कार के पश्चात् अस्थियों को कलश में रखकर दफना दिया जाता था। इसके अलावा, संगम समाज में आंशिक समाधीकरण व पूर्ण समाधीकरण दोनों का चलन था।
- यद्यपि ब्राह्मण धर्म को संगम समाज में प्रमुखता प्राप्त थी, लेकिन वहाँ बौद्ध व जैन धर्मों का विकास भी हुआ था।

आर्थिक स्थिति (Economic Condition)

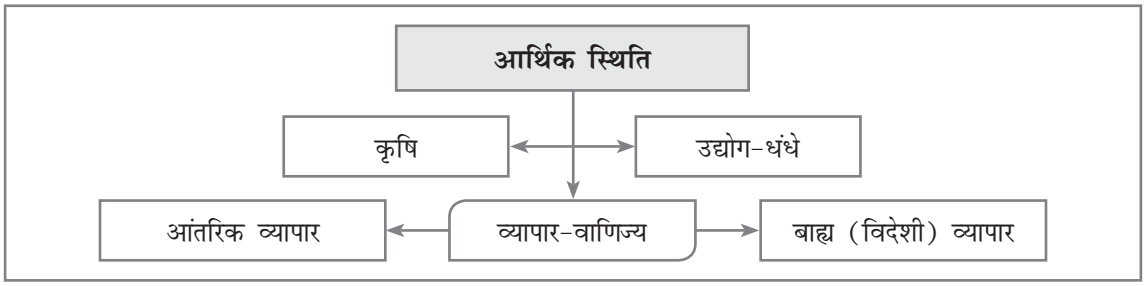

कृषि

- 'कृषि' संगम अर्थव्यवस्था का मुख्य आधार थी, क्योंकि राजकीय आय का एक बड़ा हिस्सा इसी क्षेत्र से आता था। भू-राजस्व संभवतः उपज का छठा भाग होता था जो नकद व अनाज दोनों रूपों में अदा किया जा सकता था। भूमि अत्यंत उपजाऊ थी तथा धान, गन्ना, रागी, हल्दी, कटहल, गोलमिर्च आदि फसलें उगाई जाती थीं। धनी कृषक 'वेल्लार' तथा कृषक मज़दूर 'कडैसियर' कहे जाते थे। इस समय सिंचाई व्यवस्था बेहतर थी तथा इस हेतु कुँओं, तालाबों, नहरों आदि जल-निकायों का निर्माण करवाया गया था। इसके अलावा, लौह उपकरणों की उपलब्धता भी कृषि विकास को गति प्रदान कर रही थी।
- संगम काल में भूमि को उसकी भौगोलिक अवस्थिति व विशिष्टता के आधार पर निम्नलिखित 5 हिस्सों में वर्गीकृत किया गया था–

क्रम सं.	भूमि के प्रकार	संबंधित जानकारी
1	**मरुदम्**	**उपजाऊ भूमि–** सामान्यतः कृषकों का निवास स्थल
2	**कुरिंचि**	**पर्वतीय भूमि–** कृषकों का निवास स्थल
3	**मुलै**	**गोचर भूमि–** अधिसंख्य पशुपालकों का निवास स्थल
4	**नेथल**	**समुद्रतटीय भूमि–** मछुआरों व नमक निर्माताओं का निवास स्थल
5	**पालै**	**रेगिस्तानी भूमि–** उत्पादन कम, अतः निवासी लूटपाट में संलग्न

उद्योग-धंधे

- संगम काल में विभिन्न उद्योग-धंधे भी विकसित अवस्था में थे। सूती व रेशमी, दोनों प्रकार के वस्त्र उद्योगों को प्रमुखता प्राप्त थी। सूत की कताई के कार्य में मुख्यतः स्त्रियाँ संलग्न थीं। बेलबूटेदार रेशमी वस्त्र इस काल में विशिष्ट महत्त्व रखते थे। उरैयूर व मदुरै, दोनों नगर वस्त्र उद्योग के लिये प्रसिद्ध थे। वस्त्र उद्योग के अलावा मद्य, मसाला, तेल, नमक, मछली, चर्म, हाथी-दाँत, धातु आदि उद्योग भी अस्तित्व में थे।

संगमकालीन प्रमुख शब्दावलियाँ (Important Terminologies of Sangam Period)

क्र.सं.	संगमकालीन प्रमुख शब्दावलियाँ	अर्थ
1	अरसर	शासक व योद्धा वर्ग
2	शुड्डुम्	ब्राह्मण व विद्वान वर्ग
3	वेल्लार	धनी कृषक
4	वेलर/वेलिर	कृषकों का प्रमुख
5	कडैसियर	भूमिहीन कृषक मज़दूर
6	वेनिगर	व्यापारी वर्ग
7	चेति	छोटे व्यवसायियों का वर्ग
8	पेरियार	पशुचर्म के कार्य में संलग्न वर्ग
9	पुलैयन	रस्सी व पशुचर्म से चारपाई व चटाई बनाने वाले (दस्तकार)
10	एनियर	शिकारी जाति
11	मलवर	लूटपाट करने वाली लड़ाकू जाति
12	परदवर	मछुआरे
13	वीरगल/वीरक्कल/वीरप्रस्तर	वीरगति प्राप्त सैनिकों के सम्मान में निर्मित प्रस्तर स्तंभ
14	पाणर और विडैलियर	भ्रमणशील नर्तक, नर्तकी व गायक
15	मुन्नीर	हरी बोतलों में रखी जाने वाली विदेशी मदिरा
16	आप्पम्	हलवा
17	सांभर	दूध-चावल से निर्मित खाद्य पदार्थ
18	पंचतिणै	स्त्री-पुरुष की आपसी सहमति से हुआ प्रणय
19	कैक्किणै	एकपक्षीय प्रणय
20	पेरुंदिणै	अनुचित प्रणय
21	बरियमवारि	कर अदा करने वाला क्षेत्र
22	वरियार	कर वसूलने वाला अधिकारी
23	मन्रम्	राजा का न्यायालय (राज्य का सर्वोच्च न्यायालय
24	पत्तिनम्	तटीय नगर
25	चेरि	उपनगर
26	पक्कम्	पड़ोसी क्षेत्र
27	सलाई	मुख्य मार्ग/सड़क
28	तेरू	नगर की गली
29	पोडियाल	सार्वजनिक स्थल
30	अवै	ग्राम सभा

❑❑❑